Krishidhaan Sulphur

कृषिधन सल्फर

हम सब का एक ही नारा जैविक हो देश हमारा

सूक्ष्म भिगाने योग्य फफूँदनाशक

तिलहनी फसलें भारतीय आहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसका उत्पादन लगभग 24 मिलियन टन हो रहा है। तिलहन फसल के लिए संतुलित उर्वरक का प्रयोग आवश्यक है जिसमें नत्राजन फास्फोरस पौटाश, गंधक, जिंक व बोरान तत्व अति आवश्यक है।

गत वर्षों में सन्तुलित उर्वरकों के अन्तर्गत केवल नत्राजन फास्फोरस एवं पोटाश के उपयोग पर बल दिया गया। सल्फर के उपयोग पर विशेष ध्यान न दिये जाने के कारण मृदा के नमूनों में 40 प्रतिशत सल्फर की कमी पाई गई। आज उपयोग में आ रहे गंधक रहित उर्वरको जैसे यूरिया, डी. ए. पी. तथा म्यूरेट आफ पोटाश के उपयोग से गंधक की कमी निरन्तर बढ़ रही है। गंधक की कमी मुख्यतः निम्न कारणों से भूमि के अन्दर हो जाती है जिसकी तरफ कृषकों का ध्यान नहीं जाता। भूमि में सन्तुलित उर्वरक का प्रयोग न करना। लगातार विभिन्न फसलों द्वारा गंधक जमीन में लेते रहने व सल्फर रहित उर्वरकों के प्रयोग में इन तत्वों की कमी हो जाती है। ऐसे उर्वरकों का उपयोग जिसमें बहुत कम या न के बराबर सल्फ र का होना। जहाँ अकार्बनिक खादें प्रयोग में नहीं आती है वहाँ पर भी सल्फर की कमी का होना। हाल ही में तोड़कर विकसित की गई भूमि या हल्क गठन वाली बलुई मिट्टी में जहाँ निक्षालन द्वारा पोषक तत्वों की हानि हो जाया करती है गंधक की कमी पाई जा सकती है।

गंधक की कमी के लक्षण :

पौधों की पूर्ण रूप से सामान्य बढ़ोत्तरी नहीं हो पाती तथा जड़ों का विकास भी कम होता है। पौधों की उपरी पत्तियों नयी पत्तियों का रंग हल्का फीका व आकार में छोटा हो जाता है पत्तियों की धारियों का रंग तो हरा रहता है परन्तु बीच का भाग पीला हो जाता है। पत्तियां कप के आकार की हो जाती है तथा पत्तियों की निचली सतह एवं तने लाल हो जाते हैं। पत्तियों के पीलापन की वजह से भोजन पूरा नहीं बन पाता और उत्पादन में कमी आने से तेल का प्रतिशत कम हो जाता है। जड़ों की वृद्धि कम हो जाती है। तने कड़े हो जाते हैं तथा कभी–कभी ये ज्यादा लम्बें व पतले हो जाते हैं।फसल की गुणवत्ता में भी कमी आ जाती है

गंधक के लाभ:

* गंधक क्लोरोफिल का अवयव नहीं है फिर भी यह इसके निर्माण में सहायता करता है तथा पौधे के हरे भाग की अच्छी वृद्धि करता है।
* यह गंधक युक्त एमिनों अम्लों सिस्टाइन, सिस्टीन तथा मिथियोनीन तथा प्रोटीन संश्लेषण में आवश्यक होता है।
* सरसों के पौधों की विशिष्ट गंध निर्माण को यह प्रभावित करती है। तिलहनी फसलों के पोषण में गंधक का विशेष महत्व है क्योकि बीजों में तेल बनने की प्रक्रिया में इस तत्व की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
* सरसों के तेल में गंधक के यौगिक पाये जाते है। तिलहनी फसलों में तैलीय पदार्थ की मात्रा में वृद्धि करती है।
* इसके प्रयोग से बीज बनने की क्रियायों में तेजी आती है।
* यह अमीनों अम्ल, प्रोटीन (सिस्टीन व मैथिओनिन) वसा तेल एवं विटामिन्स के निर्माण में सहायक है।
* विटामिन्स (थाइमीन व बायोटिन) ग्लूटेथियान एवं एन्जाइम 3 ए 22 के निर्माण में भी सहायक है। तिलहनी फसलों में तेल की प्रतिशत मात्रा बढ़ाता है।
* यह सरसों प्याज एवं लहसुन की फसल के लिये आवश्यक है। तम्बाकू की पैदावार 15–30 प्रतिशत तक बढ़ती है।

उपयोग :

इस दवा का उपयोग सेव, अंगूर, मूँगफली, सोयाबीन, राई, सरसों, लहसून, मटर, मिर्च, भिंडी, आम, नीबू, चना, और तुवर इत्यादि फसलों पर किया जाता है।

मूँगफली टिक्का पर्ण, पत्ती तथा मटर के कीट रोगों की रोकथाम के लिए किया जाता है।

मात्रा 2–3 एमएल प्रति लीटर पानी

सावधानियाँ : दवा को न सूंघे और स्पर्श से बचे। दूषित त्वचा और कपडों को धो डालें। उपयोग के दौरान–खाना–पीना तथा धुम्रपान करना मना है खाली डिब्बों को उपयोग के बाद नष्ट करें।

अस्वीकरण : हम लेबल के अनुसार अपने उत्पाद निर्माण और गुणवत्ता के लिए आपको आवश्वस्त कर सकते है, किन्तु फसल की वृद्धि और पैदावार मुख्य रुप से मिट्टी की गुणवत्ता और जल एवं फसल प्रबंधन के तरीकों पर निर्भर है।

मात्र जैविक खेती ही है हल, आज नही तो कल